होशियार सिंह यादव

दक्षिण हरियाणा के किसान कर रहे जल संरक्षण

दिनों-दिन भूमिगत जल गहराता जा रहा है और वर्षा कम होती जा रही है। गर्मी के दिनों में तो पानी की भारी कमी हो जाती है और त्राहि-त्राहि मच जाती है। पूरा विश्व जल संरक्षण के लिए प्रयासरत है। जल को बचाने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। जो कागजों तक ही सिमटकर रह जाते हैं। किंतु कुछ सरकारी संस्थान ठीक उसके उल्टे इस जल को बचाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। वर्षा के जल को संरक्षित करने व उस जल को भूमिगत जल में मिलाने के लिए जिला महेंद्रगढ़ के कनीना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

विद्यालय में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए समूचा स्कूल प्रशासन, इको क्लब अध्यक्ष, शिक्षा अधिकारी प्रयास कर रहे हैं और वर्षा के जल को संरक्षित कर रहे हैं।

हरियाणा का नाम लबों पर आते ही याद आती है भगवान् श्रीकृष्ण उपदेश की जहां भगवान् श्रीकृष्ण ने आकर गीता का उपदेश दिया। वही क्षेत्र हरियाणा के नाम से प्रसिद्ध है। इस हरियाणा के दक्षिण भाग में जिला महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, भिवानी जिले आते हैं जहां की पृष्ठभूमि राजस्थान से मिलती-जुलती है।

दक्षिण हरियाणा में पानी की भारी किल्लत है। पहले ही जल स्तर दिनों-दिन गिरता जा रहा है वहीं जल का दोहन बहुत तेजी से हो रहा है। महेंद्रगढ़ जिले के कुछ क्षेत्रों में तो जल समाप्त हो जाने के कारण पेयजल की विकराल समस्या बनी हुई है।

पानी को बचाने के लिए पूरे ही विश्व में एक अभियान छिड़ा हुआ है और इसमें कई संस्थाएं अपना योगदान दे रही हैं। सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएं मिलकर वर्षा के जल को या फिर भूमिगत जल को बचाने के लिए कई कार्यक्रम चला रहे हैं।

सरकारी स्कूल

दिनों-दिन भूमिगत जल गहराता जा रहा है और वर्षा कम होती जा रही है। गर्मी के दिनों में तो पानी की भारी कमी हो जाती है और त्राहि-त्राहि मच जाती है। पूरा विश्व जल संरक्षण के लिए प्रयासरत है। जल को बचाने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे है। जो कागजों तक ही सिमटकर रह जाते हैं। किंतु कुछ सरकारी संस्थान ठीक उसके उल्टे इस जल को बचाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। वर्षा के जल को संरक्षित करने व उस जल को भूमिगत जल में मिलाने के लिए जिला महेंद्रगढ़ के कनीना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

विद्यालय में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिए समूचा स्कूल प्रशासन, इको क्लब अध्यक्ष, शिक्षा अधिकारी प्रयास कर रहे हैं और वर्षा के जल को

संरक्षित कर रहे हैं। उनका कहना है कि अगर इंसान इस सत्य को समझ जाए कि जल दिनों-दिन कम हो रहा है और इस दिशा में प्रयास करें तो निसंदेह एक न एक दिन सार्थक परिणाम आ सकते हैं।

वर्षा का जल जो छतों पर गिरता है उसे एकत्र करके एक बोर में डाल दिया जाए तो बहुत अधिक जल का संरक्षण किया जा सकता है। इसी प्रयास को सफल बनाने में कनीना का राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अग्रणी है। सभी छतों का जल एक पक्के नाले में गिरता है। इस नाले के जल को कहीं-कहीं बड़े पौधों को देने का प्रबंध भी किया हुआ है किंतु अधिकांश जल एकत्र होकर एक बड़े टैंक में गिरता है ताकि इस टैंक में किए गए बोर के जरिए जल भूमि में रिसकर भूमिगत जल बन जाए। इस क्षेत्र में विज्ञान

छतों से वर्षा जल संचयन।

अध्यापक एच.एस. यादव जो इको क्लब अध्यक्ष भी हैं वह न केवल इको क्लब के जरिए इस नाले की साफ-सफाई करवाते हैं अपितु छतों को भी साफ-सुथरा करवाते हैं ताकि समूचा वर्षा जल नाले में आ गिरे। इस नाले का समूचा जल बहकर एक कुंड में गिरता है। इस कुंड को बारिश होने से पहले स्वयं लगकर साफ करवा देते हैं। इस कुंड की गहराई आठ फुट है। इस कुंड के बीच में एक बोर किया हुआ है जहां एक पाइप लगा हुआ है।

प्राचार्य वेद प्रकाश यादव ने बताया कि चार बाई चार फुट के लंबे एवं चौड़े कुंड में बोर की पाइप करीब तीन फुट ऊंची है तथा निचला सिरा भूमिगत जल से मिला हुआ है। वर्षा का गंदा जल जब कुंड में गिरता है तो वो सीधा भूमिगत जल से नहीं मिलता है अपितु कुंड में खड़े तीन फुट ऊंचे पाइप के पास खड़े होकर निथरकर पाइप के जरिए भूमिगत जल में जाता है। कई वर्षों से इस विधि से वर्षा के जल का न केवल संरक्षण अपितु उसका उपयोग करते हुए बेहतर इको क्लब वाटिका का निर्माण किया गया है।

यदि इस वर्षा जल के संरक्षण की समूची कार्य प्रणाली को समझा जाए और अन्य सभी शिक्षण एवं गैर-शिक्षण संस्थानों में अपनाया जाए तो भूमिगत जल के दोहन को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इस कार्य में सबसे बड़ी चुनौती कूड़ा-कचरा है। आंधी से तथा पतझड़ के चलते हर वर्ष यह वर्षा के जल को निर्धारित स्थान तक ले जाने वाला नाला अट जाता है जिसे हर वर्ष साफ करवाना पड़ता है। यही हालात छतों की है। अगर छत साफ सुथरी नहीं होंगी तो वर्षा का जल इस नाले में कम गिर पाएगा। प्राचार्य ने सारी जिम्मेदारी इको क्लब के अध्यक्ष एच.एस. यादव को दी हुई है।

इस कार्य की यूं तो सभी लोग भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं किंतु सभी घर में इस विधि को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्षा जल के छतों से नाले में गिरने के बाद दो स्थानों में छेद किए हुए हैं जिससे कुछ जल बड़े पौधों में चला जाता है। इस प्रकार एक सुंदर इको क्लब वाटिका का निर्माण किया हुआ है जिसमें नीम, अर्जुन, घास के मैदान, सेमल के पेड़ लगे हुए हैं। फूलदार एवं अन्य औषधीय पौधे भी लगे हुए हैं। गर्मी में भी पौधे एवं घास का लॉन देखने योग्य है।

क्या कहते हैं उप-जिला शिक्षा अधिकारी

रेवाड़ी के उप जिला शिक्षा अधिकारी रामानंद यादव जो कनीना के खंड शिक्षा अधिकारी हैं और राजेंद्र सिंह खंड मौलिक शिक्षा अधिकारी हैं, वे इस कार्य की सराहना करते हैं। उनका कहना है कि यदि सभी स्कूल वास्तव में उनका अनुकरण करने लग जाएं तो वो दिन दूर नहीं जब भूमिगत जल में बढ़ोतरी होगी और जिस गति से भूमिगत जल नीचे जा रहा है वो और नीचे जाने से भी रुक जाएगा।

एक गांव का प्रयास

एक पूरा परिवार ही नहीं अपितु एक ढ़ाणी के सभी लोग बारिश के पानी का उपयोग न केवल फसल की सिंचाई में कर रहे हैं अपितु वाटर रिचार्ज भी करके जनहित के काम में लगे हुए हैं। यह ढ़ाणी मोड़ी गांव की है जो जिला महेंद्रगढ़ का ही एक गांव है।

इस ढ़ाणी के लोगों को यह नेक सलाह कृषि विभाग के एक अधिकारी ने दी और इस ढाणी के एक जन ने सभी को पानी की बचत करने की सलाह देकर न केवल घरों का गंदा जल रिचार्ज करने का मन बनाया अपितु बारिश का समस्त छतों का जल सिंचाई के काम में लेने तथा उसे स्टोर करने का मन बनाया। यह कहानी मोड़ी गांव की एक ढाणी धोला कुआं के लोगों की है।

इस ढाणी के पूर्व सरपंच गजराज सिंह की करीब चार वर्ष पूर्व शिक्षा अधिकारी एएससीओ से भेंट हुई थी जिन्होंने बताया कि पानी का दोहन यूं ही होता रहा तो आने वाले समय में पानी की भयंकर किल्लत खड़ी हो जाएगी। इसके लिए उन्होंने रेन वाटर स्टोरेज एवं उस जल से सिंचाई करने तथा घरों से निकलने वाले अपशिष्ट जल से भूमिगत जल को रिचार्ज करने की सलाह दी। यह सलाह किसान एवं पूर्व सरपंच गजराज सिंह को इतनी अधिक प्रभावित कर गई कि उन्होंने समस्त ढाणी के लोगों को मिल-बैठकर छतों का बारिश से बहने वाला जल दो कुंडों में एकत्र करने की सलाह दी जिसके लिए सभी तैयार हो गए।

दक्षिणी हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ में पानी की कमी होती जा रही है। विशेषकर भूमिगत जल कम से कम होता जा रहा है। नारनौल एवं नांगल चौधरी क्षेत्रों में जल इतना कम हो चला है कि डार्क जोन घोषित कर दिया गया है। कनीना क्षेत्र में किसानों का कहना है कि प्रतिवर्ष भूमिगत जल दस फुट नीचे जा रहा है। इस समस्या को कम करने के लिए किसान गजराज सिंह अपने पूरे आस–पास के क्षेत्र में जल संरक्षण, जल रिचार्ज, वर्षा का जल संरक्षण करके न केवल सिंचाई के लिए अपितु पेड़–पौधों के लिए पानी का प्रयोग करना सिखा रहे हैं।

गजराज सिंह बताते हैं कि वर्तमान में समस्त ढाणी के लोगों ने अपनी छतों से बारिश का बहने वाला जल धरती तक पाइपों से लाकर दो कुंडों में छोड़ रखा है जो सिंचाई के काम आता है वहीं घरों का समस्त अपशिष्ट जल नालियों द्वारा एक वाटर रिचार्ज बोर में जाकर गिरता है जिससे भूमिगत जल रिचार्ज हो रहा है। उनका कहना है कि सभी लोग इस विधि का उपयोग करें तो वो दिन दूर नहीं जब भूमिगत जल की समस्या नहीं रहेगी। कई बार अल्प संसाधन होते हुए भी कोई किसान अपनी मेहनत के बल पर ऐसा करिश्मा कर दिखलाता है जिसके चलते उनके पदचिह्नों पर अन्य किसान भी चलने लगते हैं। जिला महेंद्रगढ़ के यूं तो कई किसान अपने अद्भुत मेहनत के बल पर नाम कमा चुके हैं किंतु कनीना उप-मंडल के गांव मोड़ी का एक साधारण सा किसान अल्प संसाधनों के चलते न केवल जल संरक्षण में अहम भूमिका निभा रहा है अपितु आधुनिक खेती, जैविक कृषि, बागवानी एवं सोलर ऊर्जा का उपयोग करके किसानों को अपनी बनाई राह पर चलने को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

दक्षिणी हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ में पानी की कमी होती जा रही है। विशेषकर भूमिगत जल कम से कम होता जा रहा है। नारनौल एवं नांगल चौधरी क्षेत्रों में जल इतना कम हो चला है कि डार्क जोन घोषित कर दिया गया है। कनीना क्षेत्र में किसानों का कहना है कि प्रतिवर्ष भूमिगत जल दस फुट नीचे जा रहा है। इस समस्या को कम करने के लिए किसान गजराज सिंह अपने पूरे आस-पास के क्षेत्र में जल संरक्षण, जल रिचार्ज, वर्षा का जल संरक्षण करके न केवल सिंचाई के लिए अपितु पेड़-पौधों के लिए पानी का प्रयोग करना सिखा रहे हैं। लोगों ने अपने स्तर पर जल स्टोर बना लिए हैं। गजराज सिंह ने बताया कि जब भूमिगत जल की कमी के विषय पर चर्चा हो रही थी तो एक कृषि अधिकारी ने उन्हें भूमिगत जल को रिचार्ज करने की सलाह दी, गजराज सिंह ने उस दिन से ही जल को रिचार्ज करने की न केवल सोची अपितु अपनी ढाणी के लोगों को भी प्रेरित किया।

किसान गजराज सिंह के इस रिचार्ज बोर से करीब एक हजार लीटर जल प्रतिदिन भूमि में चला जाता है। सभी ढाणी के किसानों ने अपने घरों की छतों को साफ करवा रखा है जिसके चलते वर्षा का समस्त जल पाइपों से होकर कुंडों में चला जाता है जो या तो फसल के काम आता है या फिर रिचार्ज बोर से संग्रहण करता है।

किसान गजराज सिंह वर्ष 1990 से लगातार खेती करते आ रहे हैं और नए प्रयोग करने के लिए उतावले नजर आते हैं। घर में पढ़ा-लिखा परिवार होने के कारण परिवार को समझाना आसान रहता है। उनका मानना है कि हर घर एवं हर किसान को इस विधि से जल का संरक्षण करना चाहिए ताकि पानी की कमी एवं अनावश्यक खर्च को बचाया जा सके। किसान उनकी योजना से प्रसन्न हैं।

किसानों के प्रयास

वर्षा जल का संरक्षण हो या फिर भूमिगत जल संरक्षण इसके लिए किसान प्रयास कर रहे हैं। एक ओर जहां किसान भूमिगत पानी को बिजली की मोटरों से खींचकर अपने खेत की सिंचाई करते हैं वहीं जल का संरक्षण करने का भी भरसक प्रयास कर रहे हैं।

जिला महेंद्रगढ़ के चेलावास गांव के किसान राज सिंह भी भूमिगत जल का संरक्षण करने में लगे हुए हैं। वे अपने खेत की सिंचाई के लिए टपक सिंचाई पद्धति का लाभ उठा रहे हैं। इस टपक सिंचाई के कारण जहां जल सीधे ही पौधों की जड़ों को मिलता है वहीं पानी की बचत भी होती है।

टपक सिंचाई से पानी की बचत।

राज सिंह सिर्फ मिर्च ही नहीं अपितु अपने पास उपलब्ध छह एकड़ जमीन पर बड़ी ही समझ बूझ से अन्य कृषि करते आ रहे हैं। चार वर्षों पूर्व उन्होंने करीब एक सौ मौसमी के पौधे लगाए थे जो अब पैदावार देने लगे हैं। मौसमी के पौधों के बीच वे कभी सरसों या गेहूं तो कभी मटर की पैदावार लेते हैं। पानी की बचत के लिए उन्होंने फव्वारा सेट लगवा रखे हैं ताकि पौधों को सीधे ही पानी मिल सके उल्लेखनीय है कि कनीना क्षेत्र भी पानी के मामले में डार्क जोन में आ चुका है। किसान ने मिर्च उगाने के धंधे में नाम कमाया है। प्रतिवर्ष लाखों रुपये की सिर्फ मिर्च ही बेच लेते हैं।

जिला महेंद्रगढ़ के गांव करीरा पहले से ही सामान्य किसान महाबीर सिंह मिश्रित कृषि करके पहले से ही नाम कमाते आ रहे हैं किंतु अब उन्होंने बेरों की बेहतर क्वालिटी लगाकर सिद्ध कर दिया है कि इस क्षेत्र में बेरी के पौधे लगाकर भी एक लाख रुपये प्रति एकड़ सिर्फ बेर उत्पादन से कमा सकते हैं। वे दूसरों के लिए एक उदाहरण बनकर सामने आए हैं। अपने खेत में टपक सिंचाई का उपयोग करने वाले वे पहले किसान हैं। इस परियोजना के आधार पर उन्होंने सभी पेड़-पौधों को पानी देने तथा उनकी उचित वृद्धि करने का तरीका खोज रखा है। किसान महाबीर सिंह ने अपने खेत पर बेहतर दर्जे के बेर उगाकर नाम कमाया है।

इस प्रकार किसान ही नहीं अपितु सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाएं जल संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। उनके प्रयास काफी हद तक सफल भी हो चुके हैं। बाकी लोगों को भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि जीवन का अमृत कहे जाने वाले जल को बचाया जा सके।

संपर्क करें:
होशियार सिंह यादव
मोहल्ला-मोदीका, वार्ड नबर-01
कस्बा-कनीना-123 027,
जिला-महेंद्रगढ़, (हरियाणा)
मो.नं.: 09416348400